ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

आधुनिक विकसित समाज में सृजनकर्ता डॉ0 अम्बेडकर

अशीष कुमार, अजीत कुमार

''जिस समाज का इतिहास नहीं होता है, वह समाज कभी भी शासक नहीं बन सकता है क्योंकि इतिहास से प्रेरणा मिलती है, प्रेरणा से जाग्रति आती है, जाग्रति से सोच बनती है, सोच से ताकत बनती है, ताकत से शक्ति बनती है, शक्ति से शासक बनता है।''

वह समाज अप्रतिगामी या अविकसित समाज कहा जाता है जिस समाज का बहुतायत भाग मुख्यधारी से वंचित होता है। यह किसी भी समाज के प्रगतिगामी समाज का नैतिक ही नहीं मौलिक उत्तरदायित्व है कि जो समाज अतीत में किए गये अमानविक कार्यों की वजह से अप्रतिगामी वर्तमान को सहन करने के लिए बाध्य है।

उस समाज का कभी भी विकास नहीं हो सकता जिस समाज का अधिकांश प्रतिशत जिल्लत और जिहालत की जिन्दगी जीने को बाध्य है। संशाधनों का दोहन अनैतिक तरीके से अतीत में किए गए अन्याय और अत्याचार की वजह से चन्द समाज वर्तमान में कर रहा है।

यदि किसी समाज को विकसित समाज बनाना है तो उस समाज के निम्नतम व्यक्ति तक संशाधनों का प्रवाह बनाना होगा, यह उसी प्रकार है कि यदि किसी राष्ट्र के अधिकांश राज्यों को मुख्यधारा से जोड़ना होगा संशाधनों का प्रवाह कमजोर और विकसित राज्यों की तरफ बनाना होगा तभी राष्ट्र विकसित होगा, तथा उसका प्रत्येक नागरिक भी। डॉ0 अम्बेडकर ने उसी विश्व व्यापी प्रगतिगामी विकसित राष्ट्र तथा विकसित समाज की कल्पना अपनी यौवनावस्था से शुरू कर दी थी। अम्बेडकर ने अपनी उसी सोच को यथार्थ रूप में परिलक्षित करने के लिए निरन्तर परिश्रम तथा सार्थक उपायों का सहारा लेना यौवनावस्था में ही शुरू कर दिया था। उनका मानना था कि वही समाज तथा वही राष्ट्र प्रगति कर सकता है जिसका नायक कल्पना में नही बल्कि यथार्थ में विश्वास करता हो।

उनका प्रथम श्लोगन था– शिक्षित बनो। उन्होंने इस श्लोगन का सृजन हवा में नहीं किया था, सर्वप्रथम किया फिर करने को कहा, इसका उदाहरण विपरीत तथा विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने उच्च तथा प्रगतिगामी शिक्षा प्राप्त करके दिया इसके लिए उनका विशद् तथा विश्वस्तरीय गहन अध्ययन था तथा जिसके लिए इन्होंने अपने महापुरुषों के अध्ययनों से भी प्रेरणा ली थी।

ज्योतिबा राव फूले का कथन था– 'विद्या बिन मति गई, मति बिन गति गई तथा गति बिना अर्थ गया तथा अर्थ बिन हम शूद्र हुए।'

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

डॉ0 अम्बेडकर ने अपने ग्रन्थ who were the sudras ज्योतिबा राव फूले को ही समर्पित किया था। क्योंकि अम्बेडकर को उत्साह तथा उर्जा अपने महापुरुषों तथा विश्वस्तरीय अध्ययन से प्राप्त होती थी।

डॉ0 अम्बेडकर मानना था कि शिक्षित व्यक्ति से ही विकसित समाज का तथा शिक्षित समाज से विकसित राज्य का तथा शिक्षित राज्य से विकसित राष्ट्र का निर्माण होता है। शिक्षा के ही माध्यम से उन्होंने विश्व व्यवस्था को पुरातन व्यवस्था से नूतन व्यवस्था में परिवर्तित करने का प्रयास किया उस प्रयास का कारण उनके द्वारा समाज को प्रगतिगामी दिशा तथा दशा प्रदत्त ग्रन्थ थे जिनमें से प्रमुख निम्न हैं–

1. Who were the sudras
2. Annihilation of caste
3. What congress and Gandhi have done Untouchable
4. Gautam Buddha and his Dhamma
5. Thaughts on Pakistan
6. State and minority
7. Slavery and Untouchability

और अन्य अनन्य पत्र–पत्रिकाएं तथा ग्रन्थ उनके पठन–पाठन का ही परिणाम था। भारत को दशा तथा दिशा देने वाला अनुदित तथा द्रुतगामी संविधान जिसके माध्यम से उन्होंने विश्व व्यवस्था से प्राप्त अन्य अनेक अच्छाइयों को उस राष्ट्र को समर्पित किया जो पुरातन तथा अप्रतिगामी मार्ग प्रारम्भ अर्थात् प्रस्तावना में ही 'बहुजन हिताय तथा बहुजन सुखाय' की बात की जो कभी गौतम बुद्ध द्वारा वैज्ञानिक सोच पर आधारित पथ बौद्ध पथ था।

द्वितीय श्लोगन संगठित करो उनका मानना था कि विखरे हुए समाज से प्रगति की बात करना निरर्थक है। उनका मानना था कि संगठन में वह चमत्कारिक शक्ति होती है जैसे एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं एवं अंगुलियां मिलकर मुट्ठी बन जाती हैं। इसको अमली जामा प्रदान करने के लिए इन्होंने सर्वप्रथम बहिष्कृत हितकारिणी सभा का 20 जुलाई, 1924 को समता समाज संगठन–1927, इण्डिपेन्डेन्ट लेबर पार्टी–1935, अनुसूचित जाति फेडरेशन–1942 का सृजन किया। जिसका उद्देश्य संगठन बनाकर व्याप्त अस्पृश्यता नामक विकृति को समाप्त करना।

सांगठनिक उदाहरण के रूप में इन्होंने जगह–जगह जाकर विखरे तथा असहाय समाज में नवचेतना जगाकर इनको एकत्रित करने का कार्य किया और अन्त में इन विभिन्न संगठनों को एक करने के लिए इन्होंने एक राजनीतिक पार्टी आर0पी0ई का गठन किया ताकि जो परिश्रम तथा ज्ञान का उपयोग इन्होंने संगठनों को बनाने में किया फिर कहीं वह विखर न जाए इसलिए उन्होंने संगठनों को मंच प्रदान करने के लिए इन्होंने एक बड़ मंच का सृजन किया।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

क्योंकि उनका मानना था कि राजनीतिक सत्ता एक ऐसी मास्टर चाभी है जिससे प्रगति के सारे ताले खोले जा सकते हैं। तथा समय–समय पर आवश्यकतानुसार इन्होंने बिखरे हुए तथा वंचित समाज को प्रदेश, देश तथा विश्व मंच में अपनी मांगों के लिए सशक्तता प्रदान करने हेतु अन्य अनेक संगठनों का सृजन किया अर्थात् विश्वव्यापी विकसित समाज के सृजन का एक पथ।

तृतीय श्लोगन, संघर्ष करो, उनका मानना था कि यदि अधिकार मांगने से न मिले तो उसे संघर्षरत होकर प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और उनके इस कार्य रूप का उदाहरण–

1. काला राम मन्दिर आन्दोलन
2. चोबदार तालाब सत्याग्रह
3. महार सत्याग्रह
4. डिप्रेस्ड क्लास सम्मेलन
5. नासिक सत्याग्रह

उपरोक्त उदाहरणों के माध्यम से इन्होंने बहुजन तथा वंचित समाज को यह जताने का प्रयत्न किया कि यदि आपके अधिकारों का अनावश्यक पुरातनी व्यवस्था दुरुपयोग कर रही है तो उसके विरुद्ध इन्होंने संघर्ष का आवाहन् किया तथा एक बड़े विरोध के उदाहरण के रूप में मनुस्मृति को अग्नि को समर्पित करते हुए भ देखा जा सकता है।

डॉ0 अम्बेडकर का स्पष्ट दृष्टिकोण जो इन्होंने यौवनावस्था में शपथित किया था उसके साकार रूप के लिए उन्होंने विभिन्न चरणों से गुजरते हुए, अथक प्रयत्नों के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयत्न किया तथा इस अविकसित, वंचित, बहुजन समाज को सुशिक्षित, सुसंस्कृत, आधुनिक सोच प्रदान की।

अम्बेडकर ने अविकसित, दिशाहीन समाज का जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति में कथित तौर पर बाधा होते हैं, को एक नई सोच, नई दृष्टि अपने श्लोगन शिक्षित, संगठित तथा संघर्ष करो के माध्यम से प्रदान की ताकि वह बहुजन समाज जो अपने मौलिक अधिकारों से भी वंचित था देश को विकासशील से विकसित बनाने में अपने प्रण तथा प्राणों को आहूत कर सकें उस अविकसित रूप से प्रदत्त व्यवस्था को तिरस्कृत कर सके तथा अपने उस पुरातन रोपित चोले को त्यागकर आधुनिक तथा विकसित समाज का सृजन करें क्योंकि इनका मानना था विकसित सोच के साथ आधुनिक राज्य का उदय होता है तथा आधुनिक राज्य से विकसित राष्ट्र का निर्माण होता है तथा विकसित राष्ट्र ही विश्वव्यापी समाज का अनुगामी होता है।

अतः निःसन्देह कह सकते हैं कि 'डॉ0 अम्बेडकर एक इतिहास पुरुष और मसीहा के रूप में अवतरित हुए थे, यह कहना अतिश्योक्ति न होगी।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

REFERENCE

1. **Moon Vasant,** Dr. Babasaheb Ambedkar writing and speeches, vol. 1, 9 and 10, Education Department, Government of Maharashtra, Bombay-1993.
2. **Keer, Dhananjay,** Dr. Ambedkar Life and Mission, Popular, Bombay, 2nd, ed. 1962.
3. **D.R. Jatava,** The Social Philosophy of B.R. Ambedkar, Phonex, Publishing House, Agra-1965.
4. **Constituent Assembly Debates,** (25-11-1949) Vol. xi.
5. **Lokhande, G.S., B.R. Ambedkar :** A Study in Social Democracy.
6. **Dr Ambedkar Article :** Essential condition Precedent for the successful working off democracy.
7. **Speech delivered by Dr.** B.R. Ambedkar before the Poona District law library on 22nd December, 1952.
8. **Ahir D.C.** 1973, DR. Ambedkar and the Indian Constitution, Buddha vihar- Lucknow
9. **Ambedkar Dr. Babasaheb, 1979,** 'Annihilation of cast in writing and speech, vol. 1, Education Department, Government, Maharashtra, Bombay.